नमाज मे रफायदैन रूकू से पहले व बाद

(1) सालिम रह0 अपने वालिद सैय्यदना हजरत अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 से रिवायत करते है :–

रसुले अकरम सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम जब नमाज शुरू करते तो अपने दोनो हाथ कंधो तक उठाते, इसी तरह जब रूकू की तकबीर कहते और जब रूकू से सर उठाते तो अपने दोनो हाथ अपने कंधों तक उठाते और (समिअल्लाह हुलेमन हमेदा) कहते और सजदो मे रफायदैन नहीं करते थें। **(सहीह बुखारी 1–702, सहीह मुस्लिम 1–768)**

ये हदीस दर्ज ज़ेल किताब हदीस मे भी मौजूद है :–

सहीह इब्ने खुजैमा (232–1), सहीह इब्ने हब्बान (168–3), सहीह इब्ने अवाना (2–90), सुनन तिर्मिजी (1–59),

लेहाजा हदीस मुत्ताफाकुन अलैह है।

इस फेहरिस्त को मजीद बढ़ाया भी जा सकता है क्योकि शायद ही हदीस की कोई मोतबर किताब ऐसी हो जिस मे ये रिवायत मौजूद न हो, इस हदीस की सेहत पर कोई कलाम नहीं, इसलिये इमाम अली बिन मदनी फरमाते है :–

मेरे नजदीक ये हदीस तमाम लोगो पर हुज्रत है कि जो भी सुने वो इस पर अमल करे (फतुहुल बारी 2/175)

(2) मशहूर ताबाई हज़रत नाफे रह0 बयान करते है :–

सैय्यदना अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 जब नमाज शुरू करते तो तकबीर कहते और अपने दोनो हाथ उठाते और जब रूकू करते तो दोनो हाथ उठाते और जब समिअल्लाह हूलेमन हमेदा कहते तो दोनो हाथ उठाते और जब दो रकअत से उठते तो दोनो हाथ उठाते और इब्ने उमर रजि0 अपने इस अमल को नबी सल्लाल्लाहू अलैहे वसल्लम तक मरफू बयान करते

(सहीह बुखारी 1/708)

ये हदीस वाजेह दलील है इस बात कि कि सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रजि0 न सिर्फ बयान की गई जगहो पर नमाज मे रफायदैन को नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की सुन्नत करार देते थे बल्कि खुद भी इस सुन्नत मुबारक पर अमल पैरा थे। इस सहीह तरीन रिवायत के बर अक्स चंद लोग का कुछ कमजोर और जईफ रिवायत की बिना पर ये दावा करना कि सैय्यदना इब्ने उमर रजि0 रफायदैन को मंसूख या मतरूक समझते थे, सख्त गलत और धोका देने वाली बात है, सैय्यदना इब्ने उमर रजि0 को तो इस सुन्नत से इतनी मुहब्बत थी की जो जाहिल रफायदैन न करता उसे कंकरियां से मारते , चुनांचे नाफेह रह0 बयान करते है :–

क्रमश: 2..

सैय्यदना इब्ने उमर रजि0 जिस शख्स को देखते कि रूकू जाते और रूकू से उठते वक्त रफायदैन नहीं करता तो इसे कंकरियों से मारते

इमाम नवीव रह0 ने इस रिवायत को सहीह करार दिया है।

(3) अबु कलाबा (ताबई) रह0 बयान करते है :-

सैय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रजि0 जब नमाज पढ़ते तो तकबीर के साथ रफायदैन करते और जब रूकू करते तो रफायदैन करते और जब रूकू से सर उठाते तो रफायदैन करते और फरमाते कि रसुलूल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम इसी तरह करते थे।

(सहीह बुखारी 1/102)

ये हदीस दर्जे ज़ेल हदीस की किताबो मे भी मौजूद है :-

(सहीह इब्ने खुजैमा 1/295, सहीह इब्ने हब्बान 3/175, सहीह इब्ने उवाना 2/94)

ये सहीह हदीस भी इस बात की दलील है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम रफायदैन करते थे और इन की इक्त्तेदा व पैरवी करते हुए सहाबी रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम मालिक बिन हुवैरस रजि0 भी रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करते थे, सैय्यदना मालिक बिन हुवैरस का नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के बाद भी इस सुन्नत पर अमल पैरा रहना इस बात की दलील है कि रफायदैन हरगिज मतरूक या मंसूख नहीं है।

(4) साहाबिये रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम सैय्यदना वाईल बिन हज्र रजि0 बयान करते है :-

उन्होने नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम को देखा कि आप नमाज मे दाखिल हुए, जब तकबीर कही रफायदैन किया, हमाम (रावी) ने कानो तक बयान किया, फिर कपड़ा लपेट लिया और दांया हाथ बांये हाथ पर रख दिया और जब रूकू का इरादा किया तो अपने दानो हाथ कपड़े से निकाले और रफायदैन किया, फिर तकबीर कही और रूकू किया और समिअल्लाह हूलेमन हमेदा कहा तो रफायदैन किया, पस जब सजदा किया तो अपनी दोनो हथेलियो के दरमियान सजदा किया।

(सहीह मुस्लिम 1/173)

ये हदीस दर्जे ज़ेल किताबो मे भी मौजूद है :-

(सहीह इब्ने खुजैमा 1/356, सहीह इब्ने हब्बान 3/167, सहीह अबु अवाना 2/97)

ये हदीस भी रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करने की रौशन दलील है, इस हदीस की सेहत पर तो कोई एतराज हो नही सकता था, इसलिये मुनकरिने रफायदैन इस हदीस को रद् करने के लिये इब्राहिम नखई रह0 का एक एतराज नकल करते है कि -

क्रमश: 3 ..

वाईल बिन हिज्र रजि0 देहात के रहने वाले थे इस्लाम के अहकाम से पूरे वाकिफ न थे हुजुर के साथ एकाध नमाज ही पढ़ सके और मुझसे बेशुमार शख्सो ने हज़रत इब्ने मसऊद्द रजि0 से रिवायत किया कि आप सिर्फ इब्तेदाए नमाज मे हाथ उठाते थे और ये हुजुर से नकल फरमाते थे, अब्दुल्ला बिन मसऊद रजि0 इस्लाम से खबरदार हुजूर सल्लाल्लाहु अलेहे वसल्लम के हालात की तहकीकी खबर रखने वाले हुजूर के सफर व हजर के साथी थे। उन्होने ने हुजूर सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के साथ बेशुमार नमाजे पढ़ी।

इब्राहिम नखई रह0 का ये एतराज कतअन लायके एतबार नहीं, सैय्यदा वाईल बिन हुज्र रजि0 आराबी या देहाती न थे बल्कि यमन के अज़ीम बादशाहो की औलाद मे से थे।

इमाम अबु नईम आला सबहानी रह0 फरमाते है :–

जब नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के पास आये तो आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने सवारी से उतारा और अपने साथ मिम्बर पर बैठाया।

(तहाजीब 11/109)

ऐसे जलीलोकद्र सहाबी रजि0 की हदीस को ख्वामख्वाह के एतराज का निशाना बनाकर रद कर देना हरगिज दुरूस्त नहीं। अल्लामा मुहम्मद आबिद सिंधी हंफी, इब्राहिम नखई रह0 के इस कौल पर रद्द करते हुए लिखते है :–

इब्राहिम नखई रह0 की बात हज़रत वाईल बिन हुज्र रजि0 के बारे मे इंसाफ पर मबनी नहीं .. इन जैसे सहाबी के बारे मे ये कहना जायज नहीं कि वो आराबी थे क्योकि आराबी का माआनी तबीयत की सरकशी, सख्ती और अशया की हकीकत से नावाकिफीयत पर दलालत करता है।

(मुवाहिब)

मौलाना अब्दुल हई लखनवी हंफी ने इमाम बैहकी रह0 के हवाले से इमाम शाफाई रह0 का कौल नकल किया है :–

वो (वाईल बिन हुज्र रजि0) जलीलुलकद्र सहाबी है लेहाज़ा उन की हदीस को एक आदमी के कौल की वजह से रद्द नहीं किया जा सकता।

सैय्यदना वाईल बिन हुज्र रजि0 इन्तेहाई तफसील से नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की नमाज का मुशाहदा कर के उसे रिवायत कर रहे है, लेहाजा उन पर इस तरह की किसी तान की कोई गुंजाईश नहीं, दुसरा ये कि क्या रफायदैन को सिर्फ सैय्यदना इब्ने हुज्र रजि0 ही रिवायत करते है, हांलाकि इस को तो सहाबा किराम रजि0 का एक कसीर गिरोह रिवायत करता है, सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद्द रजि0 की हदीस को इस के माआरिज बताकर इसे रद्द करना भी कोई मआनी नहीं रखता कि हदीस इब्ने मसऊद्द रजि0 साबित ही नहीं फिर रफायदैन को तो वो सहाबा किराम रजि0 भी रिवायत करते है जो अब्दुल्ला बिन मसऊद्द रजि0 से भी ज्यादा आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की

क्रमशः 4..

खिदमत मे हाजिर रहे, जैसे सैय्यदना अबुबक्र सिद्दीक रजि0, और सैय्यदना अली रजि0 (ये सब दलाइल आगे आ रहे है इंशाअल्लाह)

चुनांचे मौलाना अब्दुल हई हंफी फरमाते है :–

बेशक हजरत वाईल बिन हुज्र रजि0 रफायदैन करने वाली रिवायत मे मुनफरिद नहीं बल्कि एक कसीर गिरोह सहाबा किराम रजि0 है। लेकिन इसके बरअक्स तर्क रफायदैन को कोई भी रिवायत नहीं करता मगर सिर्फ इब्ने मसऊद्द रजि0 (आगे इंशाअल्लाह दलाईल से साबित किया जायेग कि सैय्यदना इब्ने मसऊद्द रजि0 से भी तर्क रफायदैन साबित नहीं) और सनद के एतबार से रफायदैन की अहादिस औसक भी है और ज्यादा साबित भी

(5) सहाबी रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम सैय्यदना अबु हुमैद साअदी रजि0 ने रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की नमाज का तरीका दस सहाबा किराम रजि0 की एक जमाअत मे बयान किया तो फरमाया :–

रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम जब नमाज के लिये खड़े होते तो तकबीर कहते और अपने दोनो हाथ कंधो तक उठाते और हर हड्डी अपनी जगह एतदाल से ठहर जाती, फिर किरअत करते फिर अपने दोनो हाथ कंधो तक उठाते फिर रूकू करते और अपनी हथेलियां अपने घुटनो पर रखते (रूकू में) सर ऊंचा रखते न नीचा, फिर सर उठाते और समिअल्लाह हुलेमन हमेदा कहते और अपने दानो हाथ कंधो तक उठाते, फिर जब दो रकअत पढ़ कर खड़े होते तो तकबीर कहते और दोनो हाथ अपने कंधो तक उठाते,(जब मुकम्मल तरीका बयान कर दिया तो दस के दस) सहाबा किराम रजि0 ने कहा – आप ने सच फरमाया नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम इसी तरह नमाज पढ़ते थे।

(सुनन अबु दाऊद 1/730)

ये हदीस दर्जे ज़ेल किताबो मे भी मौजूद है :–

सहीह इब्ने खुजैमा (587,588) सुनन तिर्मिजी (304), सहीह इब्ने हब्बान (171,3)

इस हदीस को इमाम बुखारी रह0, इमाम तिर्मिजी रह0, इमाम इब्ने खुजैमा रह0, इमाम इब्ने हब्बान रह0,इमाम इब्ने तैमिया रह0, इमाम इब्ने कय्युम रह0 और इमाम खताबी रह0 वगैरह ने सहीह करार दिया है, ये सहीह हदीस इस बात की जबरदस्त दलील है कि रूकू जाते, रूकू से सर उठाते वक्त और इसी तरह दो रकअत पढ़ कर तीसरी रकअत के शुरू मे रफायदैन करना नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की सुन्नत है। इस से ये भी साबित हुआ कि रफायदैन करना नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने आखरी उम्र तक जारी रखा और इसे मंसूख या तर्क नहीं किया क्योकि सैय्यदना अबु हुमैद साअदी

क्रमशः5..

रजि0 ने इसे नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की वफात के बाद दस सहाबा किराम रजि0 के एक जमाअत मे बयान किया तो किसी एक सहाबी ने भी इसका इंकार न किया बल्कि इस रफायदैन वाली नमाज को ही नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की नमाज करार दिया, किसी एक सहाबी ने भी ये एतराज न किया कि ये अमल तो मंसूख या मतरूक है क्योकि वो सब रफायदैन इन्दरूकू व बाद फी सलात को ही सुन्नत नबवी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम समझा था।

(6) सैय्यदना अब्दुल्ला बिन जुबैर रजि0 फरमाते है :–

मैने सैय्यदना अबुबक्र सिद्दीक रजि0 के पीछे नमाज पढ़ी, वो नमाज शुरू करते वक्त, रूकू से पहले और रूके के बाद रफायदैन करते थे और अबु बक्र सिद्दीक रजि0 ने फरमाया मै ने रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के पीछे नमाज पढ़ी है, आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम नमाज शुरू करते वक्त, रूकू से पहले और रूकू के बाद रफायदैन करते थे।

(सुनन अल कबरी 73,2,)

ये हदीस भी इस बात का वाजेह सबुत है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करते थे और इसी के मुताबिक हमेशा आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के साथ रहने वाले, दुनिया व आखिरत मे आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के साथी सैय्यदना अबु बक्र रजि0 भी रफायदैन के साथ नमाज पढ़ते और इसी को आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के सुन्नत करार देते नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के सब से करीबी साथी का रफायदैन के साथ नमाज पढ़ना इस बात की पुख्ता तरीन दलील है कि रफायदैन हरगिज मंसूख या तर्क नहीं।

(7) अब्दुल्ला इब्ने कासिम रह0 (ताबई) बयान करते है :–

“लोग रसुलूल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की मस्जिद मे नमाज पढ़ रहे थे कि इन के पास सैय्यदना उमर बिन खत्ताब रजि0 तशरीफ लाये और फरमाया – अपने चेहरे मेरी तरफ करो, मै तुम्हे रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की नमाज पढ़ कर दिखाता हूं जो आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम पढ़ते और जिस का हुक्म देते थे, पस आप रजि0 किबला की तरफ मूंह कर के खड़े हो गये और अपने कंधो तक रफायदैन किया और तकबीर कही, फिर आप रजि0 ने अपनी नजर झुका ली, फिर आप रजि0 ने रफायदैन किया हत्ता की आपके दोनो हाथ कंधो के बराबर हो गये फिर आप रजि0 ने तकबीर कही, फिर रूकू किया और इसी तरह (रफायदैन) किया जब आप रूकू से खड़े हुए, आप रजि0 ने (नमाज के बाद) लोगो से कहा – रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम इसी तरह हमे नमाज पढ़ाते थे।”

(नसुबुल राया 1.416, मुसनद फारूख अलबिन कसीर रह0 1,165, शरह सुनन तिर्मिजी)

क्रमश: 6..

इससे पता चला कि सैय्यदना उमर रजि0 भी सैय्यदना अबुबक्र रजि0 और दीगर सहाबा किराम रजि0 के तरह रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करने को ही नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की सुन्नत समझते और इसी के मुताबिक लोगो को नमाज पढ़ना सिखाते थे, अगर रूकू वाला रफायदैन तर्क या मसूंख कर दिया गया था तो फिर ये एहतेमाम क्यो ?

(8) सैय्यदना अली रजि0 रिवायत करते है :–

बेशक रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम जब नमाज के लिये तकबीर कहते तो रफायदैन करते थे और जब रूकू का इरादा करते और रूकू से सर उठाते और दो रकअत से उठते तो इसी तरह (रफायदैन) करते थे।

(जज़ाए रफायदैन अल बुखारी, सहीह खुजैमा 1,294, सुनन तिर्मिजी 3423)

ये रिवायत भी इस बात की दलील है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम रूकू जाते रूकू से सर उठाते वक्त और दो रकअत से उठ कर रफायदैन करते थे इस बात को बयान करने वाले सैय्यदना अली रजि0 है जो इस बात की दलील है कि सैय्यदना अली रजि0 भी दुसरे सहाबा किराम रजि0 की तरह रफायदैन को मुतरक या मसूंख नहीं समझते थे बल्कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की सुन्नत ही करार देते थे।

(9) हजरत अता बिन अबी रबाहा रह0 बयान करते है :–

मैने सैय्यदना अबदुल्ला बिन जुबैर रजि0 के पीछे नमाज पढ़ी, वो नमाज शुरू करते वक्त, रूकू से पहले और रूकू के बाद
रफायदैन करते थे,

(सुनन अल कबरी, अल बैहकी, 2,73)

(10) सैय्यदना अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 सैय्यदना मालिक बिन हुवैरिस रजि0, सैय्यदना वाईल बिन हुज्र रजि0, सैय्यदना अबु हुमैद साअदी रजि0, सैय्दना अबुबक्र सिद्दीक रजि0, सैय्यदना उमर रजि0, सैय्यदना अली रजि0, और सैय्यदना अब्दुल्ला बिन जुबैर रजि0, की रिवायत ऊपर पेश की जा चुकी है कि ये सब जलीलोकद्र सहाबा किराम रजि0 रफायदैन को ही नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम की सुन्नत समझते थे और इसी सुन्नत के साथ अपनी नमाजे अदा करते थे, इन के अलावा भी दर्ज ज़ेल सहाबा किराम रजि0 से भी रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करना सहीह व हसन असनाद के साथ साबित है :–

क्रमशः 7 ..

1. सैय्यदना अबु मुसा अशअरी रजि0 (सुनन दारे कुतनी 1,292, सनद सहीह)
2. सैय्यदना अब्दुल्ला बिन अब्बास रजि0 (मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा सनद हसन)
3. सैय्यदना अनस बिन मलिक रजि0 (जजाए रफायदैन, सनद सहीह)
4. सैय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्ला रजि0 (मुसनद अल सराज सनद हसन)
5. सैय्यदना अबु हुरैरा रजि0 (जज़ाए रफायदैन सनद सहीह)

इससे ये बात साबित हो गई कि रफायदैन को सिर्फ सैय्यदना वाईल बिन हुज्र रजि0 ही नही बल्कि सहाबा किराम रजि0 की एक कसीर जमाअत न सिर्फ रिवायत करती है बल्कि इसी के मुताबिक इन का अमल भी साबित है।

चुनांचे मशहूर ताबई सईद बिन जुबैर रह0 से रफायदैन के मुत्तालिक सवाल किया गया तो आप रह0 ने फरमाया :–

नमाज की जीनत है और रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के सहाबा किराम रजि0 शुरू नमाज मे, रूकू के वक्त और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करते थे।

(सुनन अल कुबरी, अल बैहकी 75/2 व सनद सहीह)

इन सहीह रिवायत के बर खिलाफ कमजोर और जईफ रिवायत की बुनियाद पर ये दावा करना कि रफायदैन मुतरक या मंसूख हो गया था और सहाबा किराम रजि0 ने रफायदैन छोड़ दिया था, सिवाए दिन को रात और रात को दिन साबित करने के कोई हैसियत नहीं रखता। जो भी रिवायत रफ ायदैन के मना या तर्क पर पेश की जाती है वो हरगिज साबित नहीं या इन से जो इस्तदलाल किया जाता है वही गलत है। जिस की वजाहत हम इंशाअल्लाह आगे कर रहे है, अमीरूल मोमिनीन फीलहदीस इमाम बुखारी रह0 क्या खूब फरमाते है :–

किसी एक सहाबी रजि0 से भी रफायदैन न करना साबित नहीं

(जज़ाए रफायदैन सफा 86)

क्रमश: 8 ..

मुख़ालिफीन के दलाईल का जवाब

(1) हदीस जाबिर बिन सुमैरा रजि0

सैय्यदना जाबिन बिन सुमैरा रिवायत करते है :-

रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम हमारे पास तशरीफ लाये और फरमाया – मै तुम्हे हाथ उठाये हुए इस तरह देखता हूं जैसे शरीर घोड़ो की दुमे होती है, नमाज मे सुकुन इख्तेयार करो।

(सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात 430)

इस हदीस से ये बात साबित करने की कोशिश की जाती है कि रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने चूंकि नमाज मे हाथ उठाने की मुमानियत फरमाई, इस अमल को शरीर घोड़ो की दूमो से तशबीह दी और नमाज मे सुकून इख्तेयार करने का हुकूम दिया, लेहाजा नमाज मे रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन नही करना चाहिये।

पहला जवाब

इस हदीस से इस बात की दलील लेना कि रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन नही करना चाहिये बातिल है, क्योकि इस हदीस मे कतअन ये बात मौजूद नहीं कि सहाबा किराम रजि0 रूकू के वक्त हाथ उठा रहे थे तो नबी सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने इस से मना किया, इस रिवायत मे तो इस बात की वजाहत ही मौजूद नहीं कि हाथ कब उठाये जा रहे थे ? जिसको देखकर आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने इस अमल पर नाराजगी का इजहार किया और इस से मना कर दिया। इस रिवायत से अगली रिवायत मे ये वजाहत मौजूद है, चुनांचे सैय्यदना जाबिर बिन सुमरा रजि0 ही बयान करते है :-

हम लोग रसुल सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम के साथ नमाज पढ़ते तो खत्म नमाज पर अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह कहते हुए हाथ से इशारा भी करते थे, ये देख कर आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया – तुम्हे ये क्या हो गया है ? तुम अपने हाथो से ऐसे इशारा करते हो जैसे शरीर घोड़ो की दुमे होती है, तुम मे से जब कोई नमाज खत्म करे तो अपने भाई की तरफ मूंह करके सिफ जबान से असस्लामो अलैकुम व रहमतुल्लाह कहे और हाथ से इशारा न करे।

(सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात 431)

सही मुस्लिम मे ही इससे अगली रिवायत मे भी ये वजाहत इसी तरह मौजूद है कि सहाबा किराम रजि0 सलाम फेरते वक्त हाथ से इशारा करते थे जिस को देख कर आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने नाराजगी का इजहार करते हुए हाथ से इशारा करने से मना कर दिया। इस बात का रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करने से हरगिज कोई ताल्लुक नहीं।

क्रमश: 9 ..

दुसरा जवाब :-

तमाम अय्यमा मुहद्दसीन का इस बात पर इत्तेफाक है कि हदीस जाबिर बिन सुमरा रजि0 का ताल्लुक तशह्हुद और सलाम के साथ है, रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन के साथ नहीं, किसी एक भी मोहद्दसीन व अईय्यमा ने इस हदीस से मना रफायदैन का इस्दलाल नहीं किया, मसलन दर्जे ज़ेल मोहद्दसीन ने इस हदीस पर सलाम का बाब बांधा है :-

1. इमाम नववी रह0 फी शरह मुस्लिम
2. इमाम अबु दाऊद रह0 फी सुनन बाब फी सलाम
3. इमाम शाफाई रह0 बाबुल सलाम फी सलात
4. इमाम नसई रह0 बाब सलाम बलयदीन
5. इमाम तहावी रह0 फी माआनी अलअसार बात सलाम फी सलात
6. इमाम बैहकी रह0 फी सुनन अल कबरी
7. इमाम अली अल मुत्तकी रह0 फी कंजुल अमाल

इनके मुकाबले मे किसी एक मुहद्दसीन ने भी इस हदीस पर मना या तर्क रफायदैन का बाब नहीं बांधा, मुहद्दसीन किराम की इस अजमाली तबूवीयब से ये बात मजीद वाजे और पुख्ता हो गई कि इन सब के नजदीक भी इस हदीस का ताल्लुक तशहदूद और सलाम के साथ है, रूकू के साथ नहीं। अलावा आजी खुद मुहद्दसीन ने वाजे अल्फाज मे भी इस बात की निशानदेही की है कि हदीस जाबिर बिन सुमरा रजि0 का ताल्लुक तशहदूद और सलाम के साथ है रूकू वाले रफायदैन के साथ नहीं।

चुनांचे इमाम बुखारी रह0 फरमाते है :-

बाज बे इल्म लोगो का इस हदीस से दलील पकड़ना जो जाबिर बिन सुमरा रजि0 से मरवी है कि आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया – क्या वजह है कि मै तुम्हे देखता हूं ...... तो ये रिवायत सिर्फ तशहदूद के बारे मे है कयाम के बारे मे नहीं। जिस शख्स का इल्म मे थोड़ा सा भी हिस्सा है वो इस रिवायत से दलील नहीं लेता। ये बात मशहूर है इस मे कोई इख्तेलाफ नहीं।

(तलखीस अल हबीर)

इमाम नौवीवी रह0 फरमाते है :-

इस रिवायत से रूकू जाते और सर उठाते वक्त रफायदैन न करने की दलील लेना अजीब बात और सुन्नत से जेहालत की कबीह किस्म है।

(अल मजमूआ)

क्रमशः 10..

हाफिज इब्ने हजर असकलानी रह0 फरमाते है :–

इससे रूकू के वक्त रफायदैन के मना पर दलील लाना दुरूस्त नहीं क्योकि पहली हदीस दूसरी हदीस की मुख्तसीर है

(तलखीस अल हबीर)

इससे पता चला कि हदीस जाबिर बिन सुमरा रजि0 से मना रफायदैन पर इस्तदलाल करना हरगिज दुरूस्त नहीं, और अहनाफमे से कुछ लोगो का अवकात को अलग अलग करार देना भी गलत है क्योकि पहली हदीस दूसरी हदीस की मुख्तसीर है, इसी लिये अहनाफ ही मे से कुछ लोगो ने रफ ायदैन के मसले मे इस हदीस से इस्तदलाल को गलत और इंसाफ के खिलाफ करार दिया है।

चुनांचे हंफी देवबंदीयो के शेखुल हिंद मेहमूदुलहसन देवबंदी फरमाते है :–

बाकी अजनाब अल खिल की रिवायत से जवाब देना बराए इंसाफ दुरूस्त नहीं, क्योकि वो सलाम की बारे मे है कि सहाबा किराम रजि0 फरमाते है कि हम बवक्त सलाम नमाज इशारा बुलंद भी करते थे आप सल्लाल्लाहु अलैहे वसल्लम ने इस को मना फरमा दिया।

(तकरीर हजरत शेखुल हिंद 65)

मौलाना तकी उस्मानी हंफी देवबंदी फरमाते है :–

लेकिन इंसाफ की बात ये है कि इस हदीस से हंफीया का इस्तदलाल मशतबा और कमजोर है।

(दर्से तिर्मिजी 36/2)

<u>तीसरा जवाब :–</u>

हदीस जाबिर बिन सुमरा रजि० मे तो रूकू वाले रफायदैन का जिक्र तक नहीं फिर न जाने इसे रफायदैन के मसले पर पेश क्यो किया जाता है ? अगर हठधर्मी और नाइसांफी का मुहाजरा करते हुए दुसरी रिवायत और मुहद्दसीन किराम की तसरीहात से कतअ नजर कर के ये कहा जाये कि इस मे नबी सल्ललल्लाहू अलैहि वसल्लम की नमाज के दौरान कहीं भी हाथ उठाने से मना कर दिया है लेहाजा ये रूकू वाले रफायदैन के मना पर भी दलील है तो जवाबन अर्ज है कि फिर खुद इस पर मुखालेफिन का अमल भी नही क्योकि वो खुद भी शुरू नमाज मे नमाज वित्र मे कुनुत से पहले और नमाज ईदैन मे कई बार रफायदैन करते है। अगर रूके वाले रफायदैन इस हदीस से ममनूअ है तो फिर खुद जिन जगहो पर नमाज मे रफायदैन करते है वो भी मना है क्योकि इस रिवायत मे खास किसी भी जगह का जिक्र ही नही है।

लेहाजा सही बात यही है कि इस हदीस का कोई ताल्लुक नमाज मे नबी सल्ललल्लाहू अलैहि वसल्लम से साबित किसी भी रफायदैन के साथ नहीं बल्कि इस का ताल्लुक तशहदूद और सलाम के साथ है, अगर इस रिवायत को मुत्तालिक नमाज मे हाथ उठाने से मना पर दलील बनाया

क्रमश: 11..

जाये तो फिर शुरू नमाज वाला रफायदैन, ईदैन के जायद तकबीरात वाला रफायदैन और वित्र मे कुनूत से पहले किया जाने वाला रफायदैन कैसे सही है ? इतनी वजाहत के बावजूद भी इस रिवायत से रफ ायदैन के खिलाफ दलील लाना महज हठधर्मी और सीनाजोरी ही है। अल्लाह समझ की तौफीक दे ! आमीन।

(2) हदीस अब्दुल्ला बिन मसऊद्द रजि0

"सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद्द रजि0 ने फरमाया – मै तुम्हे रसुल अल्लाह सल्ललल्लाहू अलैहि वसल्लम के नमाज न पढ़ाऊ ? फिर आप रजि0 ने नमाज पढ़ी और हाथ नही उठाये सिवाए पहली दफा के।"

(सुनन तिर्मिजी 257 सुनन अबू दाऊद 748)

इस रिवायत को इमाम तिर्मिजी रह0 ने हसन और इमाम इब्ने हजम रह0 ने सहीह करार दिया है, इस रिवायत से ये साबित करने की कोशिश की जाती है कि रफायदैन सिर्फ शुरू नमाज मे करना चाहिये।

पहला जवाब :–

ये हदीस सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद्द रजि0 हरगिज साबित नहीं बल्कि इल्लत कादहा के साथ मालूल है और सनदन मतनन दोनो तरह जईफ है। मन्दरजा जेल अईय्यमा व मुहद्दसीन ने इसे जईफ और मालूल करार दिया है :–

1. इमाम अब्दुल्ला बिन मुबारक रह0 फरमाते है – अब्दुल्ला बिन मसऊद्द के रफायदैन को तर्क करने वाली हदीस साबित नहीं है। **(तिर्मिजी हदीस नं0 255)**
2. इमाम हातिम रजाई रह0 फरमाते है – ये हदीस खता है
3. इमाम शाफई रह0 ने तर्क रफायदैन की अहादिस को तर्क कर दिया कि ये हदीस नहीं **(देखिये किताब अलाम 2101,7 फतहूल बारी 220,2)**
4. इमाम अहमद बिन हंबल ने इस रिवायत पर कलाम किया।
5. इमाम दारे कुतनी रह0 ने इसे गैर महफूज करार दिया (देखिये अलअलल अल्लाह)
6. इमाम इब्ने हब्बान फरमाते है है ये रिवायत हकीकत मे सब से ज्यादा जईफ है क्योकि इस मे ऐसी गलतियां है जो इसे बातिल करार देती है। (तनखीस अल खबीर 222)
7. इमाम अबु दाऊद फरमाते है – ये हदीस मुखतसीर है तवील हदीस से और उन अल्फ ाज के साथ हरगिज सहीह नहीं (सुनन अबू दाऊद्द 255)
8. इमाम यहया बिन आदम रह0 (जजाए रफायदैन)

क्रमश: 12..

9. इमाम अबूबक्र रह0 ने इस हदीस पर जिरह की

10. इमाम बुखारी रह0 (जजाए रफायदैन)

इस से साबित हुआ कि कि हदीस इब्ने मसऊद को जमहूर उलमा व मुहद्दसीन ने जईफ और मालूल करार दिया है। ये सब अईय्यमा उम्मते मुसलमा के मुसतनद और मोतबर उलमा थे। इन सब का मुत्तफका तौर पर इस रिवायत को जईफ व मालूल करार देना, इमाम तिर्मिजी, के हसन और अल्लामा इब्ने हजम रह0 के सहीह कहने पर हर लिहाज से मुक्क्दम है, लेहाजा ये हदीस बिला शक व शुबहा जईफ है और इस से इस्तदलाल बिल्कुल बातिल है।

दुसरा जवाब :-

इस रिवायत का दारोमदार सुफयान सूरी रह0 पर है जैसा कि इस कि तखरीज से जाहिर है, सुफयान सुरी रह0 सिका,हाफिज, और आबिद होने के साथ साथ मुदल्लिस भी थे इन को दर्ज जेल मुहद्दसीन ने मुदल्लिस करार दिया है –

इमाम यहया रह0, इमाम बुखारी रह0, इमाम यहया बिन मोईन रह0, इमाम अबू मेहमूद रह0, इमाम अली बिन अब्दुल्ला मदनी रह0 अल्लामा इब्ने तर्कमानी हंफी, इमाम हाकिम रह0

इमाम सलाउद्दीन अल अलाई रह0 फरमाते है – सुफियान सूरी रह0 उन मजहूल लोगो से भी तदलीस करते जिस का पता भी नहीं चलता।

इस रिवायत की सनद को सहीह साबित करना तो मुनकरिन के बस की बात नहीं चुनांचे वो मौजूदा दौर के चंद अहले हदीस उलमा से भी इस हदीस का सहीह या हसन होना नकल करते है हालांकि इस हदीस को जमहूर अय्यमा व मोहद्दसीन ने जईफ कहा है और उन के मुकाबले मे आज के चंद उलमा की कोई हैसियत नहीं। दुसरा ये कि इस हदीस को सनदन भी ब दलाईल जईफ साबित किया जा चुका है, अब इस के मुकाबले मे किसी का भी बिला दलील इस रिवायत को सहीह करार देना कोई माअनी नहीं रखता। जो बात उसूली तौर पर ही गैर सहीह है वो किसी के सहीह कहने से सहीह नही हो सकती, चाहे कहना वाला अहले हदीस हो या गैर अहले हदीस, जो इस हदीस को सहीह कहता है उसे चाहिये कि हमारे दलाईल को रद्द करते हुए ब दलाईल इस हदीस को सहीह साबित करे।

नीज ये कि सुफियान सूरी रह0 का मुदल्लिस होना और मुदल्लिस की अन वाली रिवायत का जईफ होना खुद मुखालेफिन के अपने घर से भी साबित है, जैसा कि –

सरफराज अहमद खान सफदर हंफी देवबंदी बहवाला लिखते है :-

“मुदल्लिस रावी अन से रिवायत करे तो वो हुज्जत नही ये कि वो तहदीस करे या इस का कोई सका मताबेह हो (खजाईने सुन्नत)

फिर खुद इसी किताब मे सुफयान सुरी रह0 को मुद्दल्लिस भी करार दिया है (देखिये खजाईन सुनन 77/2)”

क्रमशः 13 ..

अमीन ओकरवी हंफी देवबंदी ने भी सुफ़ियान सुरी रह0 को मुदल्लिस तसलीम कर के इन की अन वाली रिवायत पर जिरह कर रखी है **(मजमुआ रिसाईल 331/3)**

इसी तरह फिकह हंफी के दुसरे तकलीदी ग्रुप के अहमद रजा बरेलवी फरमाते है :–

"और मुदल्लिस जमहूर मुहद्दसीन के मजहब मे मरदूद न मुसनद है **(फतावा रिजविया 245/5)**"

अहमद रजा खान मजीद लिखते है –

"और मुदल्लिस असूल मुहद्दसीन पर नामकबूल है (फतावा रजविया 266/5)"

मुहम्मद अब्बास रजवी बरेलवी एक जगह लिखते है :–

"यानि सुफियान सुरी रह0 मुदल्लिस है और ये रिवायत उन्होने आसिम बिन कलीब से अन के साथ ली है और उसूल मुहद्दसीन के तहत मुदल्लिस का अनअना गैर मकबूल है (मुनाजरे ही मुनाजरे सफा 249)"

चुनांचे साबित हुआ कि रफायदैन के खिलाफ पेश की जाने वाली सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 से मंसूब रिवायत भी जईफ है क्योकि सुफियान सुरी रह0 रावी मुदल्लिस है और इस ने ये रिवायत अन के साथ ली है।

<u>तीसरा जवाब :–</u>

सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रजि0 से मंसूब इस रिवायत मे रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन की नफी नही है बल्कि ये रिवायत आम है कि " हाथ नही उठाये सिवाए पहली दफा के " तो इस बात पर खुद मुखालेफिन का अमल भी नहीं है :–

1. अहनाफ खुद वित्र की नमाज मे पहली दफा के बाद भी दुआए कुनुत से पहले रफायदैन करते है।
2. इसी तरह नमाज इदैन मे पहली दफा के बाद भी जायद तकबीरात मे रफायदैन करते है।

अगर कहा जाए कि वित्र और इदैन की तखसीस दूसरी रिवायत से साबित है तो रूकू से पहले और रूकू के बाद वाली रफायदैन के तखसीस भी दूसरी सहीह रिवायत से साबित है।

इस हदीस से इसतदलाल करने वालो के लिये जरूरी है कि वो इस हदीस के अमूम से वित्र और इदैन के रफायदैन को बचाने की फिक्र करे क्योकि वो तो इस हदीस को सहीह बावर करवाते है, फिर इस हदीस के खिलाफ वित्र मे कुनुत से पहले और इदैन की नमाज मे जायद तकबीरात के साथ रफायदैन क्यो करते है ?

चौथा जवाब :-

अगर ये हदीस साबित भी होती तो इस से रफायदैन को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योकि वो तो नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और कसीर सहाबा किराम रजिअल्लाहू अन्हू से सहीह तौर पर साबित है। ज्यादा से ज्यादा ये कहा जा सकता है कि सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 की राय इस मसले मे अलग थी जिस तरह बाकी कुछ मसाइल मे भी अलग रही हांलाकि सुन्नत कुछ और है।

मिसाल के तौर पर सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रजि0 रूकू करते हुए हाथो को बजाए घुटनो पर रखने के रानो के दरमियान रखने के कायल थे (जिसे ततबीक कहा जाता है) और इसे ही सुन्नत समझते और अपने शागिर्दो को भी इसी की तालीम देते थे।

(देखिये सहीह मुस्लिम, किताब अलसलात बाब – रूकू मे हाथो का घुटनो पर रखना और ततबीक का मंसूख होना)

जिस तरह इस मसले मे सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 का मौकूफ इस मसले मे सही नहीं बल्कि रूकू के दौरान घुटनो पर हाथ रखना ही सुन्नत है, जैसा कि अहनाफ भी तसलीम करते है है, इसी तरह अगर रफायदैन की नफी वाली रिवायत सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 से साबित भी होती तो बात वो मानी जाती जिस को कसीर सहाबा रदि0 नबी अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से सहीह तौर पर बयान करते है, ये इल्जामी जवाब है वरना सहीह बात तो यही है कि रफायदैन का तर्क सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 से सहीह साबित ही नही, जैसा कि बा दलाईल बयान किया जा चुका है, अल्लाह समझने की तौफीक दे – "आमीन"

(3) हदीस बरा बिन आजिब रजि0

यजीद बिन अबी जियाद अन इब्ने अबी लैला अन अलबरा बिन आजिब रदि0 की सनद से मरवी है कि नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम शुरू नमाज मे रफायदैन करते थे, यहा तक कि आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के अंगूठे कानो की लव तक हो जाते फिर आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम दोबारा न करते **(अबू दाऊद)**

इस रिवायत से भी रूकू वाले रफायदैन पर एतराज किया जाता है –

पहला जवाब :-

इस हदीस का दरोमदार एक रावी यजीद बिन अबी जियाद पर है जो कि जमहूर मोहद्दसीन के नजदीक जईफ है, मुहद्दसीन इकराम का इस के बारे मे फैसला मुलाहिजा फरमाईये :-

इमाम यहया रह0 फरमाते है :- जईफ अलहदीस, कवी नही (अल कामिला बिन अदी 2729/7)

क्रमशः 15..

इमाम अबूज़र अलराजी रह0 फरमाते है – इस की रिवायत से एहतजाज न किया जाये (अल जिरह 265/9)

इमाम अकीली रह0 ने इसे जईफ रावियो मे जिक्र किया है (अलजईफुल कबीर 379/4)

इमाम नसई रह0 ने फरमाया कि – कोई नही (अल जईफ 651)

इमाम बैहकी रह0 ने फरमाया :– गैर कवी (अल सुनन कबरी 62/2)

इमाम इब्ने कसीर रह0 फरमाते है :– जईफ (तफसीर इब्ने कसीर 98/2)

इमाम इब्ने हब्बान रह0 ने इसे जईफ मे शुमार किया है

हाफिज इब्ने हजर असकलानी रह0 फरमाते है :– और जमहूर ने इस की हदीस को जईफ करार दिया है (हदी अलसारी)

इससे मालूम हुआ कि अय्यमा मुहद्दसीन की अकसरीयत के नजदीक यजीद बिन जियाद जईफ रावी है और इस की हदीस को जमहूर मुहद्दसीन ने जईफ करार दिया है – लिहाजा रफायदैन के तर्क पर इस की मजकूरा रिवायत भी जईफ और ना काबिल इसतदलाल है।

दूसरा जवाब :–

ये रिवायत यजीद बिन जियाद पहले "समला यउद्द" यानि फिर आप दोबार न करते, के अलफाज के बगैर बयान करते थे, फिर आखिरी उम्र मे इस ने कुछ लोगो की तलकीन कबूल कर के ये अलफाज खुद से बढ़ा दिये थे।

इमाम सुफियान बिन अयना रह0 को यजीद ने यही रिवायत मक्का मे इन अल्फाज "सुमला यउद्द" यानि फिर आप दोबारा न करते, के बगैर बयान की (मूलाहिजा करे किताब अल मजर व हैनला बिन हब्बान 100,3) यानि इस कदीम रिवायत मे तर्के रफायदैन का कोई जिक्र नहीं।

इमाम सुफियान रह0 फरमाते है :–

"फिर मै कुफा आया और यजीद से मुलाकात की तो इस ने इस हदीस मे "फिर दोबारा न करते" के अल्फाज बढ़ा दिये थे मेरा ख्याल है कि कुफियो ने इसे तलकीन की थी। **(किताब अल्लामा शाफाई 104,1)**"

अलल अल हदीस के माहिर इमाम दार कुतनी रह0 ने भी यही कहा है कि यजीद ने आखिरी उम्र मे तलकीन कबूल कर के ये अल्फाज बढ़ा दिये थे **(सुनन दारे कुतनी 294,1)**

हाफिज इब्ने हब्बान रह0 बयान करते है :–

"इस रिवायत को इराकियों ने रूकू को जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन की नफी पर पेश किया है और इस रिवायत मे फिर दोबारा न करते, की ज्यादती नही थी और कूफियो ने यजीद बिन

क्रमश: 16 ..

अबी जियाद की आखिरी उम्र मे इसे ये तलकीन की थी, पस यजीद ने इस तलकीन को कूबूल कर लिया जैसा कि सुफियान बिन उयैना ने बयान किया है ... और जिस शख्स का मशगला इल्म हो, वो इस तरह की कमजोर तरीन रिवायत को एहतजाज के तौर पर जिक्र नहीं करता।" **(किताब अलमजर वहैयन 100,3)**

मुहद्दसीन की इन तसरीहात से मालूम हुआ कि यजीद बिन अबी जियाद ये रिवायत अपनी जिन्दगी के इब्तदाई दौर मे "फिर दोबारा न करते" के अल्फाज के बगैर बयान करता था बाद मे इस ने कुछ लोगो की तलकीन कबूल कर के खुद से ये अल्फाज बढ़ा दिये थे लेहाजा इस रिवायत से इस्तदलाल गलत है।

तीसरा जवाब :-

यजीद बिन अबी जियाद, जईफ होने के साथ साथ मुदल्लिस भी था इसे इमाम अलअलाई रह0, इमाम हाकिम रह0 इमाम अबू महमूद अल मकदसी रह0 इमाम सयूती रह0 और हाफिज इब्न हजर असकलानी रह0 वगैर ने मुदल्लिस करार दिया है।**(देखिये जामेह अल तहसील फी अहकाम अलमरसील स0 112, उलूमूल हदीस स0 105, 67 तबकात अल मुदल्लिस)**

यजीद बिन अबी जियाद से तर्के रफायदैन यानि सुमला यऊद्द के इजाफे वाली जितनी भी रिवायत है इन मे से किसी मे भी इस ने समाअ की तसरीह नही की, लेहाजा ये हदीस मुदल्लिस के अनाना की वजह से भी जईफ है मुदल्लिस की मआनअन रिवायत अदम तसरीह समाअ की सुरत मे जईफ होती है जैसा कि हदीस अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 के दसूरे जवाब मे साबित किया जा चुका है। चुनांचे साबित हुआ कि तर्के रफायदैन पर पेश की जाने वाली ये रिवायत भी जईफ है और इस काबिल नही कि इस से इस्तदलाल कायम किया जा सके।

इसके अलावा यज़ीद बिन अबू ज़ियाद जईफ है और शीआ भी था, फिर आखिरी उम्र मे उस का हाफिजा खराब हो गया (तकरीब) फिर वह मुदल्लिस था, इस के अलावा यह कि रफायदैन वाली हदीसे ऊला है क्योकि वह मुसबत है और मन्फी पर मुसबत को तर्जीह हासिल होती है।

(4) सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रजि0 से मंसूब एक और रिवायत

मुहम्मद बिन जाबिर अन हमाद अन इब्राहिम अन अलकमा की सनद से रिवायत है कि सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रदि0 ने फरमाया :-

"मैने नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और अबू बक्र रजि0 और उमर रजि0 के साथ नमाज पढ़ी है, वो शूरू नमाज मे तकबीर ऊला के सिवा हाथ नहीं उठाते थे।" **(सुनन दारे कुतनी 295,1)**

क्रमश: 17 ..

इस रिवायत को भी तर्के रफायदैन पर जोर व शोर से पेश किया जाता है कि तर्के रफायदैन का सबूत नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ साथ सैय्यदना अबूबक्र रजि0 सैय्यदना उमर रजि0 और सैय्यदना अब्दुल्ला बिन मसऊद रजि0 से दे दिया गया है।

अलजवाब :–

ये हदीस सख्त जईफ है और कई अय्यमा मुहद्दसीन ने इस को साफ तौर पर जईफ करार दिया है बल्कि कुछ ने तो इसे मौजू रिवायत मे शामिल किया है – मुलाहिजा फरमाईये :–

1. इमाम दारे कुतनी रह0 इस रिवायत को बयान करने के बाद खुद फरमाते है :– "इस हदीस को सिर्फ मुहम्मद बिन जाबिर ने बयान किया और वो जईफ था" (सुनन दारे कुतनी 295,1)
2. इसी तरह इमाम बैहकी रह0 ने भी इस रिवायत को जईफ करार दिया (सूनन अल कुबरी)

यानि जिन के हवाले से ये रिवायत पेश की जाती है वो खुद भी इसे जईफ करार देते है इस के बावजूद उन्ही के हवाले से इस रिवायत को पेश कर के अवाम को गुमराह किया जाता है।

3. इमाम अहमद बिन हबंल रह0 फरमाते है – ये हदीस मुन्कर है और उन्होने इस हदीस का सख्ती से इंकार किया (किताबअलल)
4. इमाम हाकिम रह0 ने इस रिवायत के बारे मे फरमाया – इसकी सनद जईफ है
5. इमाम इब्ने जौजी रह0 ने इसे मौजू करार दिया है (अल मौजूआत 2,96)
6. इमाम इब्ने अल कैसरानी रह0 ने भी इसे अपनी मौजाआत रिवायत की किताब मे जिक्र किया है (तजकिरात अल मौजूआत)

इससे साबित हुआ कि यह रिवायत शदीद जईफ है और इससे इस्तदलाल बातिल है, इस रिवायत का मर्कजी रावी मुहम्मद बिन जाबिर जमहूर अईय्यमा व मुहद्दसीन के नजदीक जईफ और मजरूह है, मुहम्मद बिन जाबिर को इमाम अहमद बिन हबंल रह0, इमाम यहया बिन मईन रह0 इमाम नसई रह0, इमाम जहबी रह0 और इमाम दारे कुतनी रह0 वगैरह जैसे जलीलोकद्र मुहद्दसीन ने जईफ और नाकाबिले एतबार करार दिया है (देखिये तहजीब अल तहजीब व दिगर किताब अल रजाल)

इन्तेहाई मोअतदल इमाम अबूज़र अलराजी रह0 फरमाते है :–

उलमा के नजदीक मुहम्मद बिन जाबिर साकित अल हदीस है (अल जिरह व अलतादील 220)

इतनी वजाहत के बाद भी ऐसे रावी की रिवायत से इस्तदलाल करके बगलें बजाना इन्तेहाई शर्म की बात है।

(5) सैय्यदना अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 से मंसूब एक रिवायत

अन इब्न अबी लैला अन नाफे अन इब्ने उमर रजि0 से रिवायत है :-

"रफायदैन सात मकामात पर किया जाये - इब्तेदाए नमाज के वक्त, बैतुल्लाह की जियारत के वक्त, सफा और मर्वा पहाड़ी पर कयाम के वक्त, वकूफ अरफा और मुजदलफा के वक्त और रमी अल जमर के वक्त।"(निसबुल राया)

इस रिवायत को इब्ने अबी लैला ने सैय्यदना इब्न अब्बास रह0 की सनद से भी रिवायत किया है (देखिये तबरानी कबीर)

इन रिवायात से मुन्करीन का इस्तदलाल ये है कि आम नमाज मे सिर्फ शुरू मे रफायदैन किया जाये।

पहला जवाब :-

ये रिवायत जईफ है क्योकि इस का रावी मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला जमहूर मुहद्दसीन के नजदीक जईफ है।

1. इमाम यहया बिन मईन रह0 फरमाते है - जईफ
2. इमाम अहमद बिन हबंल रह0 फरमाते है साई अल हिफ्ज, मजतरब अल हदीस
3. इमाम नसई रह0 फरमाते है :- हदीस मे कोई नही
4. इमाम दारे कुतनी रह0 लिखते है - जईफुल हदीस साई अल हिफ्ज
5. इमाम इब्ने हब्बान फरमाते है :- रावी सख्त गलतियां करने वाला

खुद अहनाफ ने भी इसे जईफ और मजरूह करार दे रखा है :-

6. अल्लामा जैली हनफी फरमाते है - लैस बालकोई
7. अनवर शाह कश्मीरी हनफी देवबंदी भी इब्ने अबी लैला को जमहूर के नजदीक जईफ करार देते है (मारूफ अलसुनन)

जिस रावी को जमहूर मुहद्दसीन और अईय्यमा ने जईफ, रद्दी हाफिजे वाला, बहुत ज्यादा वहम करने वाला, और सख्त गलतियां करने वाला करार दे रखा हो इस की रिवायत को कुबूल करना कहां का इंसाफ है ?

दूसरा जवाब :-

इस रिवायत मे रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन की नफी नही है बल्कि सिर्फ जिक्र नहीं है और ये बात तै है कि अगर एक चीज एक जगह साबित हो तो किसी जगह इस का जिक्र न होना इस की नफी की दलील नहीं।

क्रमश: 19 ..

कुछ लोग ख्वाम ख्वाह लोगो को गुमराह करने के लिये ऐसी रिवायत से तर्के रफायदैन की दलील पकड़ते है जिस मे सिर्फ रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन का जिक्र नहीं हालांकि ये बिल्कुल बातिल और मर्दूद बात है इसकी वजह ये है कि इन रिवायत मे रफायदैन की नफी या ममानियत नहीं है बल्कि सिर्फ रावी ने या खुद सहाबा रदि0 ने इस मौके पर बयान नहीं किया।

चुनांचे इमाम व हाफिज इब्न हजर असकलानी रह0 लिखते है :–

"किसी चीज के अदम जिक्र से इस का अदम वकू लाजिम नहीं आता"

इसी तरह अल्लामा इब्ने तरकानी हनफी फरमाते है :–

"जो किसी चीज को जिक्र न करे वो इस पर हुज्जत नहीं जो किसी चीज का जिक्र कर करे।"

लेहाजा इसी रिवायत जिस मे रूकू वाले या दूसरे साबित शुदा रफायदैन की नफी या तर्क नहीं बल्कि सिर्फ जिक्र नहीं है, से इस्तदलाल हरगिज सही नही, इस बात को मजीद यूं समझिये :–

"एक हदीस मे आया है कि नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया – जब तू नमाज के लिये खड़ा हो तो तकबीर कह....."**(सहीह बुखारी 757)**

इस रिवायत मे किबला रू होने का कोई जिक्र नहीं, इसी तरह नमाज के लिये वुजू का कोई जिक्र नहीं हांलाकि ये दोनो चीजें नमाज मे फर्ज है और दूसरी कई रिवायत से साबित है – अब सिर्फ इस रिवायत को कोई पेश कर के ये कहने शुरू कर दे कि नमाज मे वुजू या किबला रू होना जरूरी नहीं तो इस बेवकूफ को ये समझाया जायेगा कि एक चीज का एक जगह पर जिक्र न होना इस की नफी की दलील नहीं होता अगर वो चीज दूसरी जगह से साबित हो।

इसी तरह वो रिवायत जिन मे रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन का जिक्र नहीं वो इस के तर्क की दलील हरगिज नही क्योकि वो दसूरी बेशुमार रिवायत से सहीह तौर पर साबित है। खुद सहीह बुखारी की कई एक रिवायत मे शुरू नमाज वाले रफायदैन तक का जिक्र नहीं, क्या इन मे अदम जिक्र की वजह से शुरू नमाज वाला रफायदैन भी मतरूक समझा जायेगा ? कई एक बेवकूफ इन रिवायत को भी रूकू वाले रफायदैन के तर्क पर पेश कर देते है, इस बात पर गौर किये बगैर के इन रिवायत मे तो शुरू नमाज वाले रफायदैन का भी जिक्र नहीं, लेहाज़ा इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि किसी रिवायत मे एक चीज का जिक्र न होना हरगिज इस के नफी की दलील नहीं होता अगर वो दूसरी जगह से साबित हो।

तीसरा जवाब :–

इन रिवायत के पहले और दूसरे जवाब से थोड़ी देर के लिये सिर्फ नजर करते हुये ये देखे कि इन को रिवायत करने वाले है, सैय्यदना अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 और सैय्यदना अबदुल्ला बिन अब्बास

क्रमश: 20 ..

रजि0 और इन दोनो सहाबा रसुल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से खुद रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करना साबित है, सैय्यदना अब्दुल्ला बिन उमर रजि0 से तो सहीह बुखारी मे मौजूद है और सैय्यदना अबदुल्ला बिन अब्बास रजि0 से भी साबित है कि आप रजि0 रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करते थे। (देखिये मुसन्निफ इब्न अबी शैबा 1,235 व सनद हसन)

गोया हमारे मेहरबान जो जबरदस्ती इस हदीस से मतलब निकालना चाहते है कि रफायदैन मुतरक है, वो मतलब खुद इस हदीस के बयान करने वालो के जेहन मे भी नहीं था, महज मुखालेफिन की हठधर्मी और जोर जबरदस्ती ही है। अल्लाह समझने की तौफीक दे। “आमीन”

नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लमकी सुन्नत मुबारका रफायदैन अन्दरूकू व बाद फी सलात को सहीह अहादीस से साबित कर दिया गया है और इस के मुकाबले जो शहादत पेश किये जाते है उन मे से भी कसीर का जवाब तफसील से दे दिया गया है नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम से रफायदैन का साबित होना तो खुद मुखालेफिन को भी तसलीम है। इस के बाद इन का दावा है कि बाद मे रफायदैन मंसूख कर दिया गया। चुनांचे इस सुन्नत को मंसूख मानने वालो पर लाजिम है कि कोई एक सहीह मरफू हदीस पेश करे जिस मे नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने रूकू जाते और रूकू से सर उठाते वक्त रफायदैन करने से मना किया हो, वरना लोगो को महज जिद मे इस सुन्नत मुबारका से दूर न करे। आखिर मे अल्लाह से दुआ है कि हमे ताअसुब्ब और जिद की बजाए इंसाफ से काम लेने की तौफीक इनायत फरमाये और हम सब को नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के मुबारक तरीके का राही बना दे। “आमीन या रब्बुल आलेमीन।”

नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया :-

“नमाज इसी तरह पढ़ो जिस तरह मुझे पढ़ते हुए देखते हो।” (सहीह बुखारी 631)

नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया :-

“जिस ने हमारी तरह नमाज पढ़ी, हमारे किबले का रूख किया और हमारा जबीहा खाया तो वो मुसलमान है।” (सहीह बुखारी 391)

नबी अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया :-

“जिसने मेरी सुन्नत से मूंह मोड़ा, वो हम मे से नहीं।” (मुत्ताफाकुन अलैहे, सहीह बुखारी 5063, सहीह मुस्लिम 1401)

“हम सबको हक को पहचानने की समझ अता कर या रब्बुल आलेमिन । आमीन”

इस्लामिक दावाअ सेंटर
रायपुर छत्तीसगढ़